International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 868-869

धर्मशास्त्र में राजा के उत्तराधिकार के सिद्धांत

डॉ. दयाशंकर तिवारी

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद पी.जी.कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

उत्तराधिकार–उत्तराधिकार के नियमों का उल्लेख धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र दोनों के अन्तर्गत मिलता है। ऋग्वेद में इन्द्र के ज्येष्ठ पद की ओर बार–बार संकेत किया गया है। ब्राह्मणकाल में राजा का रूप वंशानुगत हो जाता है फलतः इन ग्रन्थों में संरक्षण और पितृ–सिद्धान्त का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य का मत है कि आपत्तिकाल को छोड़कर ज्येष्ठ पुत्र को ही राजा बनाना श्रेयस्कर है। मनुस्मृति में उल्लेख मिलता है कि ज्येष्ठ पुत्र उत्पनन होने के पश्चात् मनुष्य पितृऋण से मुक्त हो जाता है अतः ज्येष्ठ पुत्र अपने पिता से सब कुछ प्राप्त करता है। इसी प्रकार का वर्णन रामायण में आया है, इच्छाकुओं में ज्येष्ठ पुत्र को गद्दी मिलती है। कालिदास की रचनाओं में भी ज्येष्ठ पुत्र को युवराज बनाने का उल्लेख मिलता है। रघुवंश में राम की मृत्यु के उपरान्त लव आदि सात रघुवंशी वीरों के द्वारा अपने सबसे बड़े भाई कुश को उत्तराधिकार प्रदान करने का उल्लेख किया है– अथेतरे सप्त रघुप्रवीरा ज्येष्ठं पुरोजन्मतागुणवैश्चचकुःकुशं ++। पारियात्र अपने ज्येष्ठ पुत्र शील को तथा राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को उत्तराधिकारी नियुक्त करते हैं। आभिज्ञानशाकुन्तल में राजा दुष्यन्त सर्वदमन को अपना उत्तराधिकारी स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार विक्रमोवर्षीय नामक ग्रन्थ में राजा पुरूरवा द्वारा अपने पुत्र आयु को उत्तराधिकारी नियुक्त करने का उल्लेख मिलता है। विशाखदत्त के मुद्राराक्षस नामक ग्रन्थ में यह उल्लेख मिलता है कि अमात्य राक्षस राजा पर्वतक की मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्र मलयकेतु को उत्तराधिकारी स्वीकार करता है। इस प्रकार कालिदास और विशाखदत्त दोनों ने राजपद को आनुवांशिक तथा ज्येष्ठ पुत्र को वैध उत्तराधिकारी माना है। शिक्षा–धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र दोनों परम्पराओं में राजा की शिक्षा का उल्लेख मिलता है। गौतम धर्मसूत्र में राजा की शिक्षा के सम्बन्ध में त्रयी एवं आन्वीषिकी को महत्वपूर्ण माना गया है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में ज्ञान की चार शाखाओं का उल्लेख किया है–आन्वीषिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति।इसी प्रकार के विचार मनुस्मृति, शान्तिपर्व, याज्ञवल्क्य, कामन्दक, शुक्र, अग्निपुराण में भी मिलते हैं। कालिदास ने चार प्रकार की विधाओं का उल्लेख किया है, रघुवंश में राजा रघु के सम्बन्ध में कहा गया है कि वे आन्वीषिकी, त्रयी, वार्ता, दण्डनीति चारों विधाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं–चतस्त्र विद्याः ततार। राजा सुदर्शन धर्म, अर्थ एवं काम का फल देने वाली त्रयी, वार्ता और दण्डनीति का अध्ययन करते हैं। विशाखदत्त ने भी मुद्राराक्षस नामक ग्रन्थ में आन्वीषिकी, दण्डनीति एवं परातिसंधान आदि विधाओं का उल्लेख किया है। शिक्षा व्यवस्था–धर्म ग्रन्थों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के संस्कार तथा अश्व, गज एवं रथ की सवारी तथा विभिन्न प्रकार के अस्त्र–शस्त्र का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य का मत है कि चौलकर्म के उपरान्त राजकुमार को लेखन और अंकगणित का ज्ञान कराना चाहिए। उपनयन के उपरान्त उसे शिष्ट लोगों से वेद एवं आन्वीषिकी का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। विभिन्न विभागों के अधीक्षकों से वार्ता तथा व्यावहारिक राजनीतिज्ञों से दण्डनीति का अध्ययन करना चाहिए। इसी प्रकार कौटिल्य का यह मत है कि राजा को दिन के प्रथम भाग में हाथी, घोड़े तथा रथ की सवारी एवं अस्त्र–शस्त्र का अभ्यास करना चाहिए। दिन के अगले भाग में इतिहास–अर्थात् धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र का पाठ करना चाहिए। कालिदास ने राजा की शिक्षा के अन्तर्गत धर्मशास्त्र के अध्ययन का उल्लेख किया है। रघुवंश में–नृपस्यधर्मो मनुना प्रणीतः का उल्लेख किया है। आभिज्ञान शाकुन्तल में दुष्यन्त को लक्ष्य करते हुए शार्ंगरव कहता है–जिसने जन्मकाल से ही छल का नाम भी न सुना हो उसकी बातें असत्य समझी जाय तथा दूसरों को वंचित करने की कला विद्या के रूप में सीखने वालों के कथन सत्य मान लिए जाते हैं, अर्थात् इससे प्रकट होता है कि राजनीतिशास्त्र (जिसमें परातिसंधान व कूटनय सम्मिलित है) कालिदास ने राजा के अध्ययन का विषय माना है। रघुवंश में राजा रघु द्वारा मुण्डन संस्कार के उपरान्त सर्वप्रथम वर्णमाला के अभ्यास का उल्लेख मिलता है, तदोपरान्त वे साहित्य का अध्ययन प्रारंभ करते हैं। राजा सुदर्शन पटिया पर लिखने का अभ्यास करते हैं तथा विद्वानों के संसर्ग से दण्डनीति एवं राजनीति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। राजा रघु मन्त्र युक्त अस्त्रों की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त करते हैं जो कि स्वयं अद्वितीय धनुर्धर हैं। राजा प्रतिदिन मन्त्रियों से राज्य कार्य के सम्बन्ध में वार्ता करते हैं। आभिज्ञानशाकुन्तल में राजा दुष्यन्त को धनुष विद्या में निपुण बताया गया है। विक्रमोवर्शीय नामक ग्रन्थ में धनुर्वेद का उल्लेख मिलता है जिसमें युद्ध–विद्या तथा धनुष बाण के प्रयोग की शिक्षा दी जाती है–गहीतविद्यो धनुर्वेदे। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में अश्व, गज एवं रथ की सवारी करने वाले राजाओं का उल्लेख किया है तथा कौटिल्य के समान विद्याओं के अभ्यास की आवश्यकता पर बल दिया है–बाण मोक्षश्चलेषु। धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र के ग्रन्थों में उचित शिक्षा के लिए विनय की आवश्यकता पर बल दिया गया है। कौटिल्य का मत है कि जो राजा विद्या से विनीत–विद्याविनोतो होता है वह चिरकाल तक पृथ्वी का भोग करता है। मनु का मत है कि बहुत से राजा विनय के अभाव में शक्तिशाली होते हुए भी नष्ट हो जाते हैं। कालिदास ने रघुवंशों में विनयशील राजा रघु का उल्लेख किया है राजा दिलीप शिक्षा आदि संस्कारों से विनीत हुए को युवराज बनाते हैं–निसर्गसंस्कारविनीत।

संदर्भ

1. ऋग्वेद 1:5:6, 3:50:3 तैतिरीय संहितो–5:2:6, शतपथब्राह्मण 12:9:31
2. टमकपब प्दकमग प्ब चण 218
3. कौ0 1:17
4. मनु0 9:109
5. रामायण 2:110:36, 2:3:40

6. रघु0 3:55
7. रघु0 16:1
8. रघु 18:18
9. रघु 12:2 रामेश्रीर्न्यस्यतामिति
10. शाकु0 अंक 7 पृ0 103 भगवन्। खलुमेवंश प्रतिष्ठा
11. विक0 5–17, माल0 पु0 102
12. मुद्रा0 2:5
13. गौतम0 11:3
14. कौ0 1:2
15. मनु0 7:43, शान्तिपर्व 59:33, याज्ञवल्क्य 1:311, कामन्दक 2:2 शुक्र0 1:152, अग्निपुराण 238:8
16. रघु0 3:30, 5:21, चतस्त्रः विद्याः परिसंख्या
17. रघु0 18:50 जग्राहविद्याः
18. मुद्रा0 अंक 1 पृ0 86–स चौशनस्यां दण्डनीत्यां चतुषष्ट्यङ्गे ज्योतिः शास्त्रे च परं प्रावीण्यमुपगतः
19. ऋग्वेद0 5:57:2, 6:75:17, 5:57:2, 6